Class-X

Hindi-A (002)

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(खण्ड - क)

(क) लेखक सर्वेश्वर दयाल सक्सेना जी ने 'मानवीय करुणा की दिव्य चमक' पाठ में फादर कामिल बुल्के का संस्मरण प्रस्तुत किया है क्योंकि वे इनका बहुत आदर और सम्मान करते थे। फादर संन्यासी बनने बेल्जियम से भारत आए थे। उनके मन में हर मनुष्य के प्रति प्रेम और करुणा का विद्यमान थी। उनका हृदय सदा दूसरों के स्नेह से पिघला रहता था जिसकी चमक उनके चेहरे पर साफ दिखाई देती थी। वे सबके सुख-दुख में शामिल होते थे और उत्सवों में जाकर आशीर्वाद प्रदान करते थे। इस प्रकार 'मानवीय करुणा की दिव्य चमक' शीर्षक पाठ से मेल खाता है और पूर्णतः सार्थक है।

(ख) फादर कामिल बुल्के हमेशा शांत स्वभाव के थे। वे हमेशा जोशीले रहते थे और उन्हें कभी गुस्से होते हुए लेखक ने नहीं देखा। परंतु वह हमेशा हिंदी को राष्ट्रीय भाषा बनाने की मांग करते थे। उन्हें हिंदी और भारतीय साहित्य

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

से गहरा लगाव था। वे केवल इसी बात पर लेखक ने उन्हें झुँझलाते हुए देखा है कि हिंदी को हमारी राष्ट्रीय भाषा का दर्जा दिया जाए। इन्हें इस कादर को हिंदी वालों द्वारा ही हिंदी की उपेक्षा पर बहुत दुख होता था।

(ग) 'लखनवी अंदाज़' पाठ में लेखक ने सेकंड क्लास का टिकट इसलिए खरीदा क्योंकि वह एकांत में समय बिताकर अपनी नई कहानी के विषय में सोचना चाहते थे। साथ ही खिड़की से प्राकृतिक दृश्य का भी आनंद लेना चाहते थे। इसका कारण यह भी हो सकता है कि लेखक स्वयं फर्स्ट क्लास का टिकट लेने में असमर्थ हो और थर्ड क्लास में भीड़-भाड़ होती है। इसलिए लेखक ने सेकंड क्लास का टिकट लेना ही उचित समझा होगा।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

~~(घ) लेखक ने अपनों आत्म-सम्मान आत्म-सम्मान को चिन~~

(घ) लेखक ने अपना आत्म-सम्मान और गुमान बनाए रखने के लिए ही खीरा खाने से इनकार कर दिया था। यदि लेखक खीरा खा लेते तब भी नवाब साहब खीरा नहीं खाते क्योंकि वे खीरे जैसी साधारण वस्तु को खाने में शर्म अनुभव कर रहे होंगे। वे एक नवाब थे जो अपनी अमीरी का दिखावा और ढोंग कर रहे थे। वे घमंडी स्वभाव के थे और रईसी दिखाने के चक्कर में अपना नुकसान करा बैठे थे। इसलिए यदि लेखक ने खीरा खा भी लिया होता तो भी नवाब साहब को खीरा खाना मंजूर नहीं होता।

2 2. (ख) 'अट नहीं रही है' कविता में निराला जी ने प्रकृति की मादकता का ~~वर्णन किया है~~ सजीव वर्णन किया है। फागुन के महीने में चारों ओर वातावरण मनुष्य को मंत्रमुग्ध कर देता है। सबका मन प्रसन्न हो जाता है और जीवन में नया जोश भर जाता है

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

पेड़ों पर लगे लाल और हरे नए पत्ते नवजीवन का संकेत ~~देते~~ है दे देते हैं। चारों ओर सुगंध फैल जाती है।
मनुष्य का आसमान में पक्षी की तरह मस्त होकर उड़ने का करने लगता है। प्राकृतिक सुंदरता अपने चरम पर होती है इसलिए ऐसा लगता है जैसे ~~मानो~~ प्रकृति ने अपने गले में फूलों की सुगंधित माला पहन ली हो।

(ग) 'कन्यादान' कविता में ~~ऋतु~~ऋतुराज जी ने 'लड़की होना पर लड़की ~~क~~ जैसी दिखाई न देना' की बात ~~क~~ लड़की की माँ द्वारा प्रस्तुत की है। यह ~~इस~~ बात तत्कालीन समाज पर व्यंग्य है जो लड़कियों के लिए असुरक्षित है। लड़की की माँ विदाई के समय उसे कहती है कि लड़की की तरह कोमल, सरल और मधुर रहना पर कमज़ोर और भोली मत बनना क्योंकि वह उसे समाज में होने वाले शोषण और दुखद परिस्थितियों से बचाना चाहती है। वह नहीं चाहती कि उसकी बेटी को वह सब झेलना पड़े जो ज्यादातर स्त्रियों को झेलना पड़ता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

7

(ख) 'कन्यादान' कवि में आई पंक्ति 'लड़की अभी सयानी नहीं थी' के माध्यम से लड़की की माँ कहना चाहती है कि उसकी बेटी अभी दुनियादारी नहीं समझती है। उसे केवल विवाह के सुखों का ज्ञान है दुखों का नहीं। क्योंकि अपनी माँ के घर वह दुख से अछूती रही है। वह विवाह की सुखद कल्पनाओं में जीती है। उसे यह नहीं पता कि उसे समाज में रोज होने वाली घिनौनी हरकतों के बारे में नहीं पता है जिस कारण माँ चिंतित है कि वह इस दुनिया में कैसे जिएगी।

3.(क) हम इस बात से सहमत है कि 'माता के अँचल' पाठ में वर्णित खेल-खिलौनों की दुनिया वर्तमान खिलौनों की दुनिया से बेहतर थी। इसका कारण यह है कि पुराने ज़माने में बच्चे प्राकृतिक चीजों के साथ खेलते थे जैसे मिट्टी, तिनके, दियासलाई, घिरनी, चूहेदानी, पानी आदि जिससे उनका प्रकृति के प्रति स्नेह बढ़ता था।

आज-कल के बच्चों को मोबाईल और कंप्यूटर गेमों से

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

फुरसत नहीं है। वे सारा दिन घर में रहते हैं और कभी बाहर नहीं निकलते। उनके जीवन में कृत्रिमता का समावेश है। आजकल के बच्चे पड़ोस-कल्चर भी खत्म हो गया है जिससे वे बच्चे दोस्तों के साथ नहीं खेल पाते और प्रकृति का भी प्रयोग निरर्थक ढंग से करते हैं।

पाठ में बच्चों के माता-पिता भी खेलों में शामिल होकर मित्र की भूमिका निभाते थे परंतु आज सभी माता-पिता नौकरियों में इतने व्यस्त हैं कि घरवालों के लिए उनके पास समय नहीं है। वे बच्चों को प्लास्टिक के खिलौने, वीडियो गेम, पी.सी. (P.C.) आदि देकर अपने वात्सल्य को पूरा करते हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

(ख) 'जॉर्ज पंचम की नाक' पाठ में लेखक ने 'नाक' को मान, सम्मान और प्रतिष्ठा का द्योतक बताया है। नाक एक व्यक्ति की शान और इज्जत का प्रतीक होती है।

जॉर्ज पंचम की लाट पर नाक नहीं थी जो ब्रिटिश शासन के अपमान का प्रतीक थी। सभी अधिकारियों ने अपना रोष प्रकट नहीं किया बल्कि नाक लगाने में जुट गए क्योंकि ब्रिटेन की महारानी एलीज़ाबेथ द्वितीय पधारने वाली थीं। इसके समाधान हेतु मूर्तिकार को बुलाया गया।

मूर्तिकार हिंदुस्तान के हर पहाड़ और खान में गया, पर उसे लाट का पत्थर नहीं मिला। फिर उसने शर्मनाक सुझाव दिया कि देश के महापुरुषों की लाट पर से एक नाक उतारकर लगा दी जाए, परंतु सबकी नाक जॉर्ज की नाक से बड़ी निकली। वह हताश हो गया पर हार नहीं मानी। बिहार सेक्रेटरिएट के सामने लगी सन् 1942 में शहीद बच्चों की लाट से नाक उतारने का सुझाव रखा गया, पर उनकी नाक भी बड़ी निकली।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

10

अंत में एक हिंदू व्यक्ति की नाक काट कर लगा दी गई। यह बात पूरे देश के आत्म-सम्मान पर कहरी चोट करने वाली थी।

(खण्ड-ख)

4. (ख) ऑनलाइन खरीदारी : व्यापार का बदलता स्वरूप

आजकल हर बड़े शहर से लेकर छोटे-मोटे गाँवो तक ऑनलाइन खरीदारी का बोलबाला है। हम किसी भी समय, कहीं भी बैठ कर ऑनलाइन कुछ भी मँगा सकते हैं, वह भी बहुत कम दामों पर। दो दशक पहले तक ऐसी बहुत ही कम कंपनियाँ थीं जो ऑनलाइन व्यापार करती थीं परंतु अब बहुत कम ऐसी कंपनियाँ हैं जो ऑनलाइन व्यापार नहीं करतीं। आज छोटे-से-छोटा बच्चा मोबाइल से सामान मँगाना जानता है। ऑनलाइन शॉपिंग एपों में ~~अमेजन~~ फ्लिपकार्ट, मीशो और स्नैपडील

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

जैसी ब्रांड शिखर पर हैं। इनसे कपड़े, जूते, सजावट के सामान से लेकर रसोई घर तक का सामान मँगवाया जा सकता है। ज़ोमैटो और स्विग्गी जैसे एपों की मदद से खाने तक का सामान आधे घंटे से भी कम समय में मँगवाया जा सकता है। ~~लोगो यहाँ से~~ इसकी बहुत जरूरत है भारत को क्योंकि दूर-दराज के इलाकों में पहले किसी व्यवसायी की पहुँच नहीं थी और लोगों को बहुत दूर से सामान खरीदकर लाना पड़ता था परंतु आज सबसे कम दामों में यह उपलब्ध है।

ऑनलाइन खरीदारी के सकारात्मक प्रभाव बहुत हैं जैसे कई लाखों-करोड़ों लोगों को रोजगार मिला है, दूर के गाँवों में सामान मिलने लगा है कम समय और सस्ते दामों में लेकिन इसके कई नकारात्मक प्रभाव भी देखने में आए हैं जैसे गरीब और छोटे व्यवसायी ~~व्यवसाय~~ व्यवसाय करने वाले लोगों का धंधा चौपट हो गया है और वे पहले से ज्यादा गरीब हो गए हैं। इसका अन्य प्रभाव युवा पीढ़ी पर पड़ा है। जवान युवक-युवतियाँ सारा समय मोबाइल में अपने पसंद के उत्पाद देखने में व्यतीत करते हैं और

नायक - नायिकाओं की नकल करने का प्रयास भी करते हैं जिससे वे अपनी हैसियत से अधिक भी खर्च कर देते हैं देने में भी नहीं कतराते हैं।

सरकार को छोटे कारीगरों का व्यवसाय बनाए रखने के लिए कई नियम लागू करने चाहिए और हमें, विशेषकर युवाओं को छोटे विक्रेताओं से भी उत्पाद खरीदने चाहिए ताकि उन्हें भी अपने रोज़गार के लिए बढ़ावा मिले और वे अपनी, दैनिक जरूरतें भी पूरी कर सकें। तथा अपने परिवार की

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

पत्र लेखन

5. (क)

परीक्षा भवन
करनाल - 132xxx ।

दिनांक: 18 मई, 2022

प्रिय भाई रोहन,
सस्नेह नमस्कार।

मैं यहाँ समस्त परिवारजनों के साथ कुशलमंगल हूँ आशा है कि तुम भी हॉस्टल में ~~सकुशल~~ सकुशल होंगे। मुझे पिताजी ने बताया कि तुम सोशल मीडिया पर बहुत अधिक समय व्यतीत कर रहे हो जिसके कारण सभी विषयों में तुम्हारे अंक बहुत ज्यादा गिर गए हैं। यह तुम्हारे भविष्य के लिए बिलकुल भी उचित नहीं है।

प्रिय भाई रोहन! मैं तुम्हारी बड़ी बहन होने के नाते तुम्हें यह बता रही हूँ कि ~~यह अ~~ समय तुम अभी युवावस्था

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

में हो और यही वह उम्र है जब तुम अपने भविष्य का सुखद निर्माण करने के लिए हर संभव प्रयास करो। मैं जब भी मोबाइल चलाती हूं तुम ऑनलाइन मिलते हो। तुम्हें सोशल मीडिया के दुष्प्रभावों का ज्ञान नहीं है। इसका गलत इस्तेमाल होता है जैसे इससे धोखाधड़ी, अश्लीलता और नकारात्मकता भी फैलाई जाती है। इससे तुम्हारे स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ेगा। तुम्हारा वज़न बढ़ सकता है, यहाँ तक कि तुम्हारी आँखें भी कमज़ोर हो जाएंगी। इससे अच्छा तो तुम पार्क में टहलने चले जाया करो।

मैं आशा करती हूँ कि तुम आगे से शिकायत का मौका मुझे नहीं दोगे, अपनी पढ़ाई पर ध्यान दोगे और योग एवं व्यायाम किया करोगे। मैं तुम्हारे हमेशा स्वस्थ और सुखी रहने की कामना करती हूँ।

तुम्हारी बड़ी बहन
(क. ख. ग.)

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

विज्ञापन

6.(i) (ख)

रोशनी

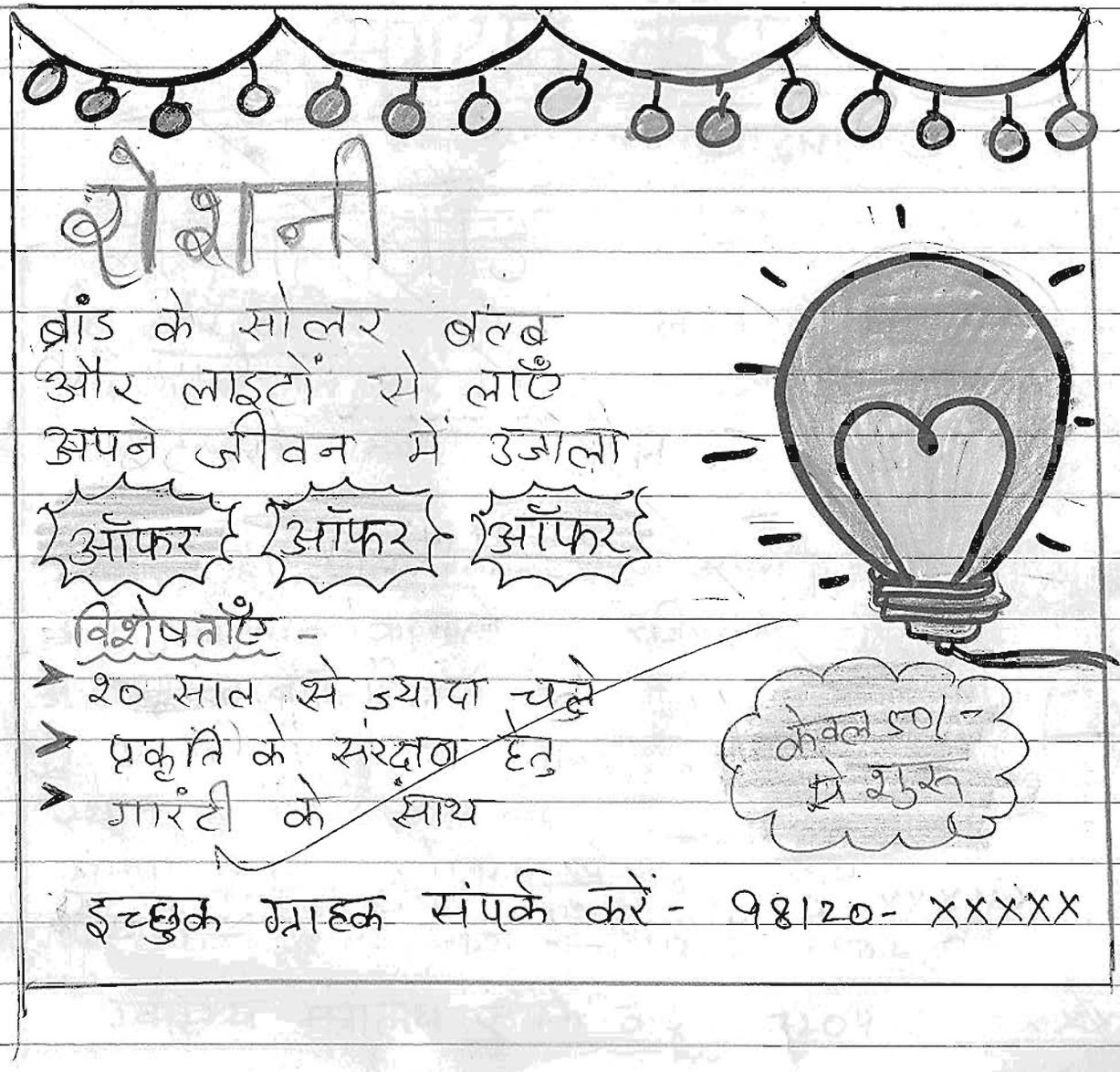

ब्रांड के सोलर बल्ब
और लाइटों से लाएँ
अपने जीवन में उजाला

ऑफर ऑफर ऑफर

विशेषताएँ -

➤ २० साल से ज्यादा चले
➤ प्रकृति के संरक्षण हेतु
➤ गारंटी के साथ

केवल 50/- से शुरू

इच्छुक ग्राहक संपर्क करें - 98120-XXXXX

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

6. (ii)
(क)

अंगदान कैंप

स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा

अंगदान है महादान .....

गरीब और वंछित लोगों के इलाज के लिए अपने अंग अवश्य दान करें। मरने के उपरांत अंगदान करने से महापुण्य मिलेगा।

सरकार द्वारा आयोजित कैंप में अपने अंगों को दान करवाने का रजिस्ट्रेशन अवश्य करवाँए।

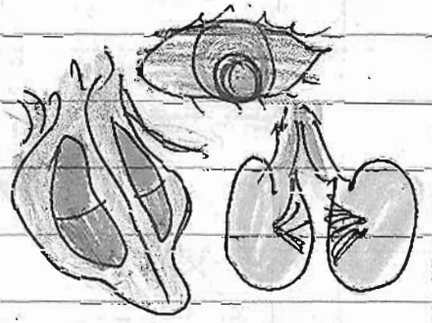

स्थान - योगेंद्र कला केंद्र
समय - 10:00 बजे प्रातः से 5:00 बजे सायं
दिनांक - 20 मई, 2002 से 10 जून 2002 तक

स्वास्थ्य मंत्रालय संपर्क केंद्र → 7204-XXXXXX

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

संदेश

7. (i) (ख)

बधाई संदेश

दिनांक : 18 मई, 2022
समय : 10:00 बजे प्रात:

आदरणीय भैया राहुल,
मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि आपका चयन विद्यालय की फुटबॉल टीम के कप्तान के रूप में हो गया है। आपकी हमेशा से ही खेल में रूचि देखकर सबके लिए यह बात हैरान करने वाली नहीं है। हमें हमेशा से पता था कि आप अपने माता-पिता का नाम गर्व से ऊँचा ~~करोगे~~ करोगे। आपको असंख्य बधाई और ~~भविष्य~~ में आशा करती हूँ कि आप भविष्य में भी सबको गौरव प्रदान करेंगे।

अ. ब. स

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

7. (ii) (ख)

बधाई संदेश

दिनांक : 18 मई, 2022
समय : 10.00 बजे प्रात:

प्रिय छात्रगण,
आप सभी को 'शिक्षक दिवस' के सफल आयोजन हेतु समस्त प्राचार्यगण की ओर से बहुत-बहुत बधाई। आपके नृत्य और गायन प्रस्तुती प्रदर्शन ने सबका मन मोह लिया। सभी आपकी वाह-वाही करते नहीं थक रहे थे। ~~सभी~~ आप सभी ने सारा कार्यभार अपने कंधों पर लिया और सारी जिम्मेदारियों का अच्छी तरह निर्वाह किया। खाना-पीना और सभी कार्यक्रम पूरे अनुशासन से हुए। फिर से बधाई और भविष्य में ~~यही~~ इसी प्रकार अपना गौरव बनाए रखना।

क० ख० ग०
(प्राचार्य)

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in